This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्रीलाट्यायनमः॥ अथसर्वस्तोमसर्वपृष्ठास्तोर्यामः॥ वरुणायुदवसानीयांतंसर्वक्रमोग्निष्टोमवल्लयोविशेषःसोच्यते। तत्रप्रथमं। अस्तोर्यामस्तृतीयस्यसाहस्रस्याज्यस्यबहिष्पवमानंप्रतिबोधीयस्तोकेरुपमुदरत्यापवर्णं। परिप्रधन्वेतिस्वर्निधनं। सोहविषः। समानमितरंपूर्वेण। वैश्वजितानिष्टशानिष्टशानागभीः। अतआग्नेयमतिरिक्तस्तोत्रीयेति। तत्राग्नेयाद्यायनंसप्तत्रैवैश्वजितान्याज्यान्याज्येषुगर्भान्कुर्यादितिधानंजयः। वाश्विकान्तुत्थान्युत्थेषितिं। यज्ञायज्ञीयंवरुहरुभितिं। एवंवरुहरुभितिं। एवंवरुहरुषपक्षद्वादशस्तोत्रेषुगर्भत्वं। अतःप्रकृतमुच्यते। तस्यैवंकृतेः। कृरुनपकाजेसृरुनपंकुर्युः। पवस्वदेवेभ्यइंद्रायसोमेत्यभिरुतेभिः। येभिर्विश्वानिकाव्यौत्वंसमुद्रियोयेभिर्वायोवरैरयनपवस्वद्विश्ववर्षणे॥ तुभ्येमाभुवनाकवेमहिम्नेसोमतस्थिरे। तुभ्यंधावंतिधेनवः॥१॥ दविद्युतत्यारुवापद्दिष्टोमंत्यारुपासोमाःशुक्रागवाशिरः। हिनानोहेतृभिर्हितआवानेवाज्यकमीत्॥ सादंतोवनुषोयथा। ऋधक्सोमस्चमूष्येसंजग्मानोदिवाकवेपवस्वसूर्यादृशे॥२॥ पवमानस्यतेकवेवाजिन्त्सर्गाअसृक्षत। अर्वंतोनश्रवस्यवः। आवाकोशंमधुश्चुतमस्रेवारेअक्षरन्। पवमानेसोअर्षतिं॥ अवावशंतधीतयः। अक्षाससमुद्रमिंदवोस्तंगावोनधेनवः। अग्मन्नृतस्ययोनिमा॥३॥ अथबहिष्पवमानं॥ विश्वरूपाज्योतिर्गनयोधूर्गानांवनिष्टनिः। अथस्तोमयोगः॥ अग्नेस्तेतृतीयस्यसाहस्रस्याज्यस्यबहिष्पवमानंप्रतिबोधीयस्तोकेरुपमुदरत्यापवर्णं। परिप्रधन्वेतिस्वर्निधनं। सोहविषः। समानमितरंपूर्वेण। वैश्वजितानिष्टशानिष्टशानागभीः। अतआग्नेयमतिरिक्तस्तोत्रीयेति। तत्राग्नेयाद्यायनंसप्तत्रैवैश्वजितान्याज्यान्याज्येषुगर्भान्कुर्यादितिधानंजयः। वाश्विकान्तुत्थान्युत्थेषितिं। यज्ञायज्ञीयंवरुहरुभितिं। एवंवरुहरुभितिं। एवंवरुहरुषपक्षद्वादशस्तोत्रेषुगर्भत्वं। अतःप्रकृतमुच्यते। तस्यैवंकृतेः। कृरुनपकाजेसृरुनपंकुर्युः। पवस्वदेवेभ्यइंद्रायसोमेत्यभिरुतेभिः। येभिर्विश्वानिकाव्यौत्वंसमुद्रियोयेभिर्वायोवरैरयनपवस्वद्विश्ववर्षणे॥ तुभ्येमाभुवनाकवेमहिम्नेसोमतस्थिरे। तुभ्यंधावंतिधेनवः॥१॥ दविद्युतत्यारुवापद्दिष्टोमंत्यारुपासोमाःशुक्रागवाशिरः। हिनानोहेतृभिर्हितआवानेवाज्यकमीत्॥ सादंतोवनुषोयथा। ऋधक्सोमस्चमूष्येसंजग्मानोदिवाकवेपवस्वसूर्यादृशे॥२॥ पवमानस्यतेकवेवाजिन्त्सर्गाअसृक्षत। अर्वंतोनश्रवस्यवः। आवाकोशंमधुश्चुतमस्रेवारेअक्षरन्। पवमानेसोअर्षतिं॥ अवावशंतधीतयः। अक्षाससमुद्रमिंदवोस्तंगावोनधेनवः। अग्मन्नृतस्ययोनिमा॥३॥ अथबहिष्पवमानं॥ विश्वरूपाज्योतिर्गनयोधूर्गानांवनिष्टनिः। अथस्तोमयोगः॥ अग्नेस्ते

Acc-No:- ~~165~~ M1020
Title:- ~~अग्नेयपर्व~~ आधोर्यम् प्रयोग
Subject:- Vedic Ritual
Vol:- - (10)
Date - 2-1-97 - 1767
Checked 2012
(1)
KKSU LIBRARY
RAMTEK
441 106
M1020
Dist Nagpur

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ज॰ अनक॰ मि॰ पव॰ स्व॰ वा॰ वो॰ दि॰ वि॰ पु॰ न॰ पा॰ प॰ मा॰ न॰ स्ये॰ नेक॰ व॰ इ॰ ति॰ ह्वि॰ ष्य॰ मा॰ न॰ स्य॰ पु॰ क्क॰ ल॰ ऋ॰ षिः॥ गा॰ य॰ त्री॰ छं॰ टः॥ सो॰ मो॰ दे॰ व॰ ता॥ इ॰ मे॰ वै॰ लो॰ का॰ ण॰ ा॰ स॰ नु॰ वै॰ म॰ नो॰ हि॰ ॥ प्रा॰ णः॥ प्र॰ स्ना॰ व॰ स्ये॰ त्या॰ दि॰ ॥ कुं॰ प॰ व॰ स्व॰ वा॰ वो॰ अ॰ ग्नि॰ यो॰ मू॰ ॥ ॐ सो॰ म॰ वि॰ त्रो॰ भि॰ रू॰ ना॰ धि॰ भी॰ २ र॰ भि॰ वि॰ श्वा॰ नि॰ को॰ २१२ वो॰ यो॰ ॥ आ॰ २३४५॥ तु॰ व॰ सु॰ तु॰ दि॰ या॰ अ॰ यो॰ म्॰ ॥ ॐ मा॰ ग्नि॰ यो॰ वा॰ च॰ ई॰ रा॰ या॰ २ न्प॰ व॰ स्व॰ वि॰ श्व॰ वो॰ २१२ ॥ कुं॰ आ॰ २ ॥ षा॰ णो॰ आ॰ २३४५ ॥ तु॰ भ्यं॰ मा॰ भु॰ व॰ नो॰ क॰ वो॰ म्॰ ॥ ॐ मा॰ हि॰ म्नि॰ सो॰ म॰ त॰ स्था॰ धि॰ रा॰ २ र॰ तु॰ म्ये॰ धा॰ व॰ ति॰ धी॰ २१२ ॥ कुं॰ आ॰ २ ॥ नो॰ वो॰ आ॰ २३४५ ॥ ऋ॰ वि॰ यु॰ त॰ तृ॰ या॰ रु॰ वो॰ म्॰ ॥ ॐ पा॰ रि॰ ष्ठो॰ भ॰ ति॰ यो॰ का॰ पा॰ रि॰ सो॰ मा॰ भु॰ क्रो॰ ग॰ वो॰ २१२ ॥ कुं॰ आ॰ २ ॥ शा॰ यि॰ रो॰ आ॰ २३४५ ॥ हि॰ न्वा॰ नो॰ हे॰ त॰ भि॰ र्हि॰ तो॰ म्॰ ॥ ॐ मा॰ वा॰ ज॰ वो॰ ज्य॰ का॰ मी॰ २ सी॰ द॰ तो॰ व॰ नु॰ षो॰ २१२ ॥ कुं॰ आ॰ २ ॥ यो॰ थो॰ आ॰ २३४५ ॥ ऋ॰ धक॰ सो॰ म॰ सु॰ त॰ स्त॰ यो॰ म्॰ ॥ ॐ सो॰ ज॰ न्मा॰ नो॰ दि॰ वो॰ का॰ वो॰ २ वि॰ प॰ व॰ स्व॰ स्त्र॰ या॰ २१२ कुं॰ आ॰ २ ॥ दृ॰ शो॰ आ॰ २३४५ ॥ २ ॥ प॰ व॰ मा॰ न॰ स्य॰ ते॰ क॰ रो॰ म्॰ ॥ ॐ वा॰ नि॰ र्ग॰ व॰ अ॰ स्र॰ क्षा॰ ता॰ २ अ॰ र्व॰ तो॰ न॰ अ॰ ग॰ २१२ कुं॰ आ॰ २ स्या॰ वो॰ आ॰ २३४५ ॥ अ॰ ज्ञा॰ को॰ श॰ मधु॰ श्रु॰ तो॰ म्॰ ॥ ॐ मा॰ स्त्र॰ गा॰ वो॰ न॰ धे॰ न॰ वा॰ २ अ॰ ग्मे॰ न॰ त॰ स्य॰ यो॰ २१२ कुं॰ आ॰ २ ना॰ यि॰ मो॰ आ॰ २३४५ ॥ ३ ॥ इ॰ ति॰ ऋ॰ ह्वि॰ ष्य॰ म॰ मा॰ नं॰ ॥ ॥ अ॰ न॰ म॰ क॰ र॰ णं॰ ॥ ये॰ नो॰ सी॰ नि॰ य॰ ज्ञ॰ मा॰ न॰ वा॰ च॰ नं॰ ॥ सै॰ र्व॰ र्व॰ सा॰ न॰ मो॰ ग॰ ध॰ र्वा॰ य॰ प॰ रि॰ क्रु॰ तं॰ स॰ मु॰ द्र॰ वः॥ ब॰ हि॰ र्वे॰ दु॰ र॰ वः॥ आ॰ व्रे॰ ण्या॰ ग्नी॰ धी॰ य॰ ब॰ हि॰ ष्य॰ म॰ मा॰ न॰ वे॰ धी॰ या॰ द्॰ ए॰ त॰ स्मा॰ वे॰ ला॰ या॰ प्रा॰ भी॰ यु॰ ः॥ त॰ तः॥ धि॰ ष्ण्यो॰ प॰ स्था॰ नं॰ ॥ अ॰ था॰ न्या॰ नि॰ ॥ त॰ त्रा॰ नि॰ दा॰ न॰ सू॰ त्रं॰ ॥ पू॰ र्व॰ बा॰ र्ह॰ ते॰ उ॰ त्त॰ र॰ रा॰ थं॰ त॰ र॰ इ॰ ति॰ शौ॰ वि॰ वृ॰ क्षिः॥ ए॰ क॰ दे॰ व॰ से॰ बा॰ र्ह॰ ते॰ द्वि॰ दे॰ व॰ त्ये॰ रा॰ थं॰ त॰ र॰ इ॰ ति॰ धा॰ न॰ ञ्ज॰ प्यः॥ धा॰ न॰ ञ्ज॰ प्य॰ म॰ त॰ मा॰ ग्नि॰ स्य॰ प्र॰ यो॰ गः॥ अ॰ ग्नि॰ दू॰ तं॰ वृ॰ णी॰ म॰ हे॰ आ॰ नो॰ मि॰ त्रा॰ व॰ रु॰ णा॰ इ॰ न्द्र॰ मि॰ न्द्रा॰ ग्नी॰ नो॰ बृ॰ ह॰ द्दि॰ वा॰ ग्नी॰ आ॰ ग॰ त॰ ꣳ सु॰ त॰ मि॰ मा॰ सा॰ ज्या॰ नि॰ ॥ सु॰ ष॰ मि॰ द्धो॰ न॰ आ॰ व॰ ह॰ मा॰ नः॥ श॰ रु॰ प॰ थि॰

राम

व॰ स्य॰ यु॰ ज॰ ति॰ ब्र॰ ध्न॰ म॰ रु॰ ष॰ तं॰ म॰ ती॰ ड्वि॰ ष॰ या॰ अ॰ र्चि॰ षे॰ ति॰ वै॰ श्व॰ ज॰ ता॰ न्या॰ ज्यो॰ ना॰ गभो॰ ॥ अथ॰ हो॰ दु॰ रा॰ ज्य॰ स्य॰ गर्भ॰ गर्भि॰ णो॰ पु॰ रस्ता॰ ज्ज॰ पः॥ ॥ ७ अ॰ ग्नि॰ दू॰ तं॰ वृ॰ णी॰ म॰ हे॰ हो॰ तारं॰ वि॰ श्व॰ वे॰ द॰ सं॰ अ॰ स्य॰ य॰ ज्ञ॰ स्य॰ सु॰ क्र॰ तुं॰ ॥ अ॰ ग्नि॰ म॰ ग्नि॰ ꣳ ह॰ वी॰ म॰ भिः॥ स॰ दा॰ ह॰ वं॰ त॰ वि॰ श्व॰ प॰ तिं॰ ॥ ह॰ व्य॰ वा॰ ह॰ पु॰ रु॰ प्रि॰ यं॰ ॥ अ॰ ग्ने॰ दे॰ वाꣳ॰ इ॰ हा॰ व॰ ह॰ ज॰ ज्ञा॰ नो॰ [illegible] बृ॰ क्ष॰ ब॰ र्हि॰ षे॰ ॥ अ॰ सि॰ हो॰ ता॰ मे॰ नु॰ र्हि॰ तः॥ ॥ ९ ॥ सु॰ ष॰ मि॰ द्धो॰ न॰ आ॰ व॰ ह॰ दे॰ वा॰ ꣳ अ॰ ग्ने॰ ह॰ वि॰ ष्म॰ ते॰ ॥ हो॰ तः॥ पा॰ व॰ क॰ य॰ क्षि॰ वा॰ ॥ म॰ धु॰ म॰ तं॰ न॰ रा॰ श॰ ꣳ स॰ ꣳ दे॰ वे॰ षु॰ नः॥ कृ॰ वे॰ ॥ अ॰ द्या॰ कृ॰ णु॰ ह्यू॰ त॰ ये॰ ॥ न॰ रा॰ श॰ ꣳ स॰ मि॰ ह॰ प्रि॰ य॰ म॰ स्मि॰ न्य॰ ज्ञ॰ उ॰ प॰ ह्व॰ ये॰ ॥ म॰ धु॰ ज्जि॰ ह्वꣳ॰ ह॰ वि॰ ष्कृ॰ तं॰ ॥ अ॰ ग्ने॰ सु॰ ख॰ त॰ मे॰ र॰ थे॰ दे॰ वा॰ ईळि॰ त॰ आ॰ व॰ ह॰ ॥ अ॰ सि॰ हो॰ ता॰ म॰ नु॰ र्हि॰ तः॥ म॰ धु॰ म॰ त॰ न॰ रा॰ श॰ ꣳ स॰ यो॰ ऋ॰ ग्वो॰ वि॰ क॰ व्य॰ ल्यः॥ त॰ त्र॰ सू॰ त्रं॰ ॥ सु॰ ष॰ मि॰ द्ध॰ इ॰ त्य॰ त्रि॰ व॰ सि॰ ष्ठ॰ श्च॰ न॰ क॰ क॰ व॰ स॰ कृ॰ ति॰ व॰ ध्र्या॰ श्वो॰ ना॰ नू॰ न॰ पा॰ त्म॰ च॰ सु॰ द्ध॰ रे॰ तू॰ ॥ अ॰ थ॰ स्तो॰ म॰ यो॰ गः॥ दी॰ क्षा॰ यै॰ ॥ अ॰ ग्नि॰ दू॰ तं॰ वृ॰ णी॰ म॰ हे॰ सु॰ ष॰ मि॰ द्धो॰ न॰ आ॰ व॰ हे॰ ति॰ ग॰ र्भ॰ मि॰ त्या॰ ग्ने॰ र्यं॰ प्र॰ थ॰ म॰ मा॰ ज्य॰ ॥ पु॰ क्क॰ ल॰ गा॰ य॰ त्री॰ अ॰ ग्नि॰ र्दे॰ व॰ ता॥ प्र॰ जा॰ प॰ ति॰ र्दे॰ वे॰ भ्य॰ इ॰ त्या॰ दि॰ ॥ कुम्॰ ॥ अ॰ ग्नि॰ दू॰ तं॰ वृ॰ णी॰ म॰ हो॰ म्॰ ॥ ॐ हो॰ तारं॰ वि॰ श्व॰ वे॰ दा॰ सा॰ र॰ म॰ स्ये॰ य॰ ज्ञ॰ स्या॰ स्र॰ २१२ कुं॰ आ॰ २ को॰ तो॰ आ॰ २३४५ ॥ अ॰ ग्नि॰ म॰ ग्नि॰ ꣳ ह॰ वी॰ म॰ भो॰ ॥ ॐ सा॰ दा॰ ह॰ वं॰ वि॰ श॰ पती॰ २ ꣳ ह॰ व्य॰ वा॰ ह॰ पु॰ स्॰ २१२ कुं॰ म्॰ आ॰ २ प्रो॰ या॰ आ॰ २३४५ ॥ अ॰ ग्ने॰ दे॰ वाꣳ॰ इ॰ हा॰ व॰ हो॰ म्॰ ॥ ॐ जा॰ ज्ञा॰ नो॰ बृ॰ क्ष॰ ब॰ र्हि॰ षा॰ इ॰ षा॰ २ अ॰ सि॰ हो॰ ता॰ न॰ आ॰ २१२ ऊं॰ म्॰ आ॰ २ डो॰ या॰ आ॰ २३४५ ॥ १ ॥ प॰ व॰ मा॰ न॰ स्य॰ ते॰ क॰ रो॰ ति॰ स॰ ति॰ स्रः॥ स॰ एक॰ या॰ स॰ एक॰ या॥ ए॰ व॰ प्र॰ थ॰ मं॰ प॰ र्या॰ यं॰ स॰ मा॰ प्य॰ गर्भ॰ र॰ त्न॰ मं॰ क॰ र्यु॰ ः॥ कुम्॰ ॥ सु॰ ष॰ मि॰ द्धो॰ न॰ आ॰ व॰ हो॰ २ उ॰ दा॰ यि॰ वा॰ ꣳ अ॰ ग्ने॰ ह॰ वि॰ र्मा॰ ता॰ र॰ यि॰ रे॰ तिः॥ पा॰ व॰ क॰ या॰ २१२ ऊं॰ म्॰ आ॰ २ क्षा॰ यि॰ यो॰ आ॰ २३४५ ॥ म॰ धु॰ म॰ तं॰ त॰

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

नूनपोमू॰ ओ याज्ञदेवेभ्यः कायाग्नयो कृणुहि ये ११२ ऊँमू॰ आर॰ तोयो॰ ओ३३४५ ॥ नराशंसमिहप्रियंमू॰ ओ
स्मिन्यज्ञेउपकायायिमधेजिह्वा ११२ यिः ऊँमू॰ आर॰ को तो ओ३३४५ ॥ अग्नेसुखतमे रथेमू॰ ओ दायिवो५
ईडितआवाहरसिहोतामन्ने ११२ ऊँमू॰ आर॰ हो यिता ओ३३४५ ॥ १ ॥ पंचभ्योहि कु॰ सए कयासए कयासतिस्रभिःसए
कया एवंगर्भेणमध्यमेपर्यायसमाप्यपुनरग्निर्देवतेइणीमहइतितृतीयपर्यायस्यस्तवनंकुर्युः आग्नेंद्र तर्पणमिहमू॰ ऊ३१
पंचभ्योहि कएतिसएकयासएकयासतिस्रभिःएवंत्रकारेणसर्वत्रगर्भस्तवनंकुर्युःस्तुतस्य॰ उपरिष्टाज्जुपः॰ भक्षः॰
अथमेत्रावरुणस्याज्यस्यगर्भगर्भिणीःपुरस्ताज्जपः॥ आनोमित्रा॰ ऋक ३॥ तानःशक्तीपा॰ गार्चिक॰ अथस्तोम
योगः॰ दीक्षायै॰ आनोमित्रावरुणा तानःशक्तीपार्थिवस्येतिगर्भमितिमेत्रावरुणंद्वितीयमार्ष्यं पुष्कलऋषिः गायत्री
छंदः॰ मित्रावरुणोदे॰ प्रजापतिर्देवेभ्यइत्यादि॰ ऊँमू॰ आनोमित्रावरुणाम्॰ ऋक ३॥ पंचभ्योहि॰ ३१॥ एवंप्रथम
पर्यायंसमाप्यगर्भस्तवनंकुर्युःऊँमू॰ तानःशक्तीपार्थिवस्योम्॰ ऋक ३॥ १ ॥ पंचभ्योहि॰ १३१॥ एवंगर्भेणप्रथमध्यमंपर्या
यंसमाप्यपुनरानोमित्रावरुणेतितृतीयपर्यायस्यस्तवनंकुर्युःऊँमू॰ आनोमित्रावरुणाम्॰ ऋक ३॥ पंचभ्यो॰ ११३॥ स्तुतस्य॰
उपरिष्टाज्जपः॰ भक्षः॰ अथब्राह्मणछंसिनआज्यस्यगर्भगर्भिणीःपुरस्ताज्जपः॰ चतुर्ऋचीमावर्त्तिष्वंत्यामुद्धरतिसत्रे॰ स्तोमाया
ऊद्धारः॰ इंद्रमिद्गाथिनोबृहत्॰ ऋ ३॥ युनेतिब्रध्नं ऋक ३॥ स्तोमयोगः॰ दीक्षायै॰ इंद्रमिद्गाथिनोबृहत्॰ युंजंतिब्रध्नमरुषंगर्भमितिमेइंद्र
तीयमार्ष्यं॰ पुष्कल॰ गायत्री॰ इंद्रोदेवता॰ प्रजापतिर्देवेभ्यइत्यादि॰ ऊँमू॰ इंद्रमिद्गाथिनोबृहत्॰ स्तोमायेंद्रमर्केभिरर्कीयिणं२इंद्र
वाणीस्त्रे ११२ ऊँमू॰ आर॰ षोतो ओ३३४५ ॥ इंद्रमिद्धरियोःसचासंमिश्लआवचोयुजाइंद्रोवज्रीहिरण्ययः ऊँमू॰ आर॰ णोयो ओ३३४५ ॥

इंद्रवाजेषुनोअवोम्॰ ओ॰ सास्तुत्रधनेषूवारउग्रेउग्राभिरूतये ११२ ऊँमू॰ आर॰ तोयो॰ ओ३३४५ ॥ १ ॥ पंचभ्योहि॰ ३१॥ एवंप्रथमंपर्यायंसमाप्य
गर्भस्तवनंकुर्युः ॥ ऊँमू॰ युंजंतिब्रध्नमरुषोम्॰ ओ॰ वारन्नपूतिन्यूषारोचेनूरोचना ११२ ऊँमू॰ आर॰ दोयिनो ओ३३४५ ॥ युंजंतिमस्यकामिषोम्॰
ओ॰ हारीविपृक्षसावधोरईशाणोधृष्णूनवो ११२ ऊँमू॰ आर॰ हो सो ओ३३४५ ॥ कैतुंकृण्वन्नकेतवोम्॰ ओ॰ पाईशेमर्यआपेशसारईसमुषद्रि
रजो ११२ ऊँमू॰ आर॰ याथो ओ३३४५ ॥ पंचभ्योहि॰ १३१॥ एवंगर्भेणमध्यमंपर्यायंसमाप्यपुनरिंद्राग्निभ्यांगाथिनोबृहदितितृतीयपर्यायस्यस्तवने
कुर्युः ॥ ऊँमू॰ इंद्राग्निभ्यांगाथिनोबृहद्गायेति ऋक त्रयं॰ पंचभ्योहि॰ ११२ स्तुतस्य॰ उपरिष्टाज्जपः॰ भक्षः॰ ॥ अथाज्यशास्त्रस्याज्यस्यगर्भगर्भिणीःपुरस्ताज्जपः॥
इंद्राग्नी॰ ऋक त्रयं॰ तमीडिष्व॰ ऋक त्रयं॰ ॥ १ ॥ अथस्तोमयोगः॰ दीक्षायै॰ इंद्राग्नी आगत॰ सुतेमाडिष्वयोअत्रिभिर्नितिगर्भमितिमेइंद्राग्नी
चतुर्थमार्ष्यं॰ पुष्कल॰ गायत्री॰ इंद्राग्नीदे॰ प्रजापतिर्देवेभ्यइत्यादि॰ ऊँमू॰ इंद्राग्नी आगत॰ सुतेमाम्॰ ओ॰ गायत्रिभिर्नभोवरेणाय्यंमस्थपीतं
धियो ११२ ऊँमू॰ आर॰ षोयितो ओ३३४५ ॥ इंद्राग्नीजरितुःसचोम्॰ ओ॰ याज्ञोजिगातिचेतनाररयोपातमिमां ११२ ऊँमू॰ आर॰
सेतो ओ३३४५ ॥ इंद्रमग्निंकविछंदो॰ ओ॰ याज्ञस्यस्तुतियोवाणीरयिता सोमस्यहतो ११२ ऊँमू॰ आर॰ षोतो ओ३३४५ ॥ ॥ पंचभ्योहि॰ ३१
एवंप्रथमपर्यायंसमाप्यगर्भस्तवनंकुर्युः ॥ ऊँमू॰ तेमीडिष्वयोआर्ष्योम्॰ ओ॰ वानोविश्वापरिषोजारहसोकृणोतिजो ११२
ऊँमू॰ आर॰ क्षोयो ओ३३४५ ॥ येइंद्रआविवासंतोम्॰ ओ॰ सस्मिन्नंद्रस्यमन्यारयुष्याय सुतरो ११२ ऊँमू॰ आर॰ ओ
षो ओ३३४५ ॥ तोनोवाजवतीरिषोम्॰ ओ॰ माश्रुन्यिपृतमनांतारइन्द्रमग्निंचनो ११२ ऊँमू॰ आर॰ ढावो ओ३३४५ ॥ १ ॥
पंचभ्योहि॰ १३१॥ एवंगर्भेणमध्यमंपर्यायंसमाप्यपुनरिंद्राग्नी आगत॰ सुतमितितृतीयपर्यायस्यस्तवनंकु

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

३ युषः ऊम्। ईऽआ॒ग्नीऽआगतꣳसुतो३ऽसु॒तो३ऽआगतः। ऋक्३। पञ्चमो११३। सुतस्योपरिष्टा॒दभ्रꣳघृतपदशाऽआज्यानि॒ऽइत्याज्यातः सवनं॥ ततश्च॒स
वनसंस्था सुप्रशास्त्रोस्तायथेतमपरस्याद्धारानक्रमणादि कुर्युः। अथमाध्यंदिनस्यपवमानस्यपुरस्ताज्जपंकुर्युः। अस्यप्रस्तो। ऋक्३। परीतोषिंचता। ऋ३। अयꣳसोमइन्द्र॒ऽऋ३। अथस्तोमयोगार्थ
अग्नेस्ते। वायुर्यु॒ज्ञेऽनु॒मि। अस्यप्रस्तो मनुघृतंपरीतोषिंचतासुतमयꣳसोमइन्द्र॒इतिमाध्यंदिनपवमानभागायत्रीभरीयवसामंतरंधंतरंदेर्घ
श्रवसयोधाजयंपाथनिसामानि। पुरुश्चन्द्रोमहीयुजं॒मदन्निर्वसिष्ठोदीर्घश्रवायुथाजित्यथवैन्यइन्द्रस्यप्रयः। गायत्रीबृहतीपंक्तयुष्णिक्छु
सि। सोमोदेः। एतावतावाव॒एतन्नोहि॒त्वयीन्द्रि॒ण॒ऽइति प्राणः प्रस्तावस्तेत्यादि। अत्रपवमानेरथंतरस्तवनकालेपश्चात्प्रोक्तं दक्षिणतो
वोदेवंबर्हिर्वेदिस्थघोषकुर्युः। ऊम्। अस्यप्रस्तोमनुघृतो३प्रस्तो३आमरीयवो॒ऽऊम्। अस्यप्रा३स्तोमनुघृतामू॒ऽऋक्त्रयं। ३। समतं
ऋक्तऽऊम्। परीतोषिंचतासुतामू॒ऽ॥ रथंतरं॒ऽऊम्। परीतोषिंचतासुतमोहाओहाइ॒ऽऋक्त्रयं। ४। यो॒ऽधाजयं। ऊम्।
श्रीणी३तोऽग्नि॒रुत्ता२३४रामू॒ऽऋ।१।६। पार्थ॒ऽऊम्। ३ ३ हो३ हो। अयंसोमा॒ऽऋक्त्रयं ७इतिसप्तदशोमाध्यंदिनः
पवमानश्चानमकं॒नं। हृषकोसि॒षांसंवर्चसानमागीश्वर्यायोपरिष्टाऽऊपश्चभक्षः। दक्षिणाप्रियइष्टं॒तत्ऋ
वैनाराशंसंभक्षयित्वाऽच्छेमंडुकुर्यात्। तत्रविशेषःबृहद्वैराजेचिवताꣳसोम्यंमध्वायुर्दधतीत्यादि। अथ
छन्दांसि॥ छं॥ बृहद्वामदेव्यस्थेतकाजेयानिपृष्ठानि। वैराजशाक्वरवैरूपरैवतानिवैश्वजितानिपृष्ठानिष
ष्ठानांगर्भाः। बृहद्वैराजगर्भंकरोतीतिनिदानसूत्रं। अथहोतुःपञ्चस्यगर्भंगर्भिणोःपुरस्ताज्जपः॥ त्वामिद्धिहवामा
हेसातावाजस्यकारवः। ऋक्त्रयं। पिबासोममिंद्रमंदतुत्वायंतेसुषावहर्यश्वाद्रिः॥ ऋक्त्रयं॥ २॥ बृह
तःस्तोत्रे दुंदुभिघोषं कुर्युः। बृहतोदुंदुभिमाहन्युरितिसूत्रं॥ सबृहदस्रजततत्स्तनयित्नोर्घोषोन्वस्रज्यतेति ब्राह्मणं॥ वैराजमस्रजततद्गन्धर्वघोषोन्वस्रज्यतेति ब्राह्मणं॥ वैराजस्यस्तो
त्रजपाक्षतउपर्यन्तरुशकलंनिधायस्तोत्रेचतस्रोपरितिरश्चीमरलीनिधायाभ्यांप्रजननंकलाद्यिःप्रदक्षिणम
भिमंथेत्। गायत्रंछंदोनुप्रजायस्व। त्रैष्टुभंछंदोनुप्रजायस्व। जागतमानुष्टुभंवैराजंछंदोनुप्रजायस्व। एवंत्रिर्मथ
येत्। पाणिभ्यामरणीःसंधानमालभ्योपजिघ्रेत्। तेजोसितेजोमयिधेहीतिमंत्रेणाग्नेयेनमथ्यमानेग्नौस्तोमं
युञ्जात्। एतत्सर्वमुद्गातृकुर्यात्॥ प्रथमस्तोमयोगः॥ बृहतारथंतरेणवास्तोमाणःप्राक्स्तोमयोगादृश्यन्ते
रुतीर्मनसाध्यायेदेरधिति॥ एरंवैबृह॰तेरं॒दीक्षायै॰। त्वामिद्धिहवामहइतिबृहद्वैराजभृ॒ऽहोतुरूपं। बृहतोभ
रद्वाजऋषिः। ककुबुष्णिहौबृहतीछंदोवैराजस्यवसिष्ठऋषिः। विराट्छंदः। उभयोरिंद्रोदेवता। प्रजापतिःसप्तदशी॰
ब्राह्मणं। पिबासोममिति॰एणं। जग्धेहिंकारे॰रहस्यब्राह्मणं। वसंतोहिंकारे॰॥ प्राणःप्रस्तावस्येत्यादि॥ नाते
ग्नोस्तुवीरवत्॥ एकविꣳशस्तोमः॥ ऊम्॥ ग्नौहोयित्वाद्धिहवामहा३ए॥ ऋक्त्रयं॥ सप्तभ्योहिंकरोति। स
प्तिस्रभिःसप्तिस्रभिःस्तुवकया॥ एवंप्रथमंपर्यायंसमाप्यवैराजेनगर्भस्तवनंकुर्युः॥ प्रनसानंप्रस्तावंतत्
लक्षणमविभाग्यानामितिलक्षणं। प्रस्तावंप्रस्तुत्यविष्टुंभान्विष्टभ्नोतीतिब्राह्मणं॥ मत्स्वाताउइत्यादि
विष्टुंभइतिसंज्ञा॥ ऊम्॥ होइयाहोइयातेइयाऽ३४३पिबे॥ ऋक्त्रयं॥ सप्तभ्योहिंकरोति। सएकयासप्तिस्रभिःस
प्तिस्रभिः। एवंवैराजगर्भंमध्यमपर्यायंसमाप्यपुनर्बृहत्तीपर्यायस्यस्तवनंकुर्युः। ऊम्॥ ग्नौहोयित्वा
द्धिहवामहा३ए॥ ऋक्त्रयं॥ प्रतेऽग्नमनजलादित्याचार्यवचनात्॥ ना२ग्निऽग्न२३४षाउडुवा६हाउवा॥ हस्व॥

CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सप्तभ्यो॰ सप्तिसप्तिसएकयासप्तिस्तोमैः॥ पुनर्दुदुभिघोषङ्कुर्युः॥ स्तुतस्य॰॥ यजमानंवाचयित्वा॥ पुनरूर्जानिवर्त्तस्वपुनरग्न
इषायुषापुनर्नःपाह्यंहसःसहरय्यानिवर्त्तस्वाग्नेपिन्वस्वधारया॥ विश्वप्न्याविश्वतस्परीति॥ अनेनमंत्रेणानिर्म
ग३ थ्याग्निमभिमंत्र्याध्वर्यवेप्रयच्छति॥ न तउक्रातावनीयंश्वाऽन्येनाभिजुहोति॥ प्रेद्धोअग्नेदीदिहिपुरोनोजसत्रया
सूर्म्यायविष्ण॥ ऊर्ध्वाशस्यंतउपयंतिवाजास्त्वाहेतिपूर्वी॥ इदमग्नयेप्रजापतये॥ आगत्योपरिष्टान्नपः॥ भक्षः॥
इत्येवमेकविंशस्तोमहोतुःपक्षे॥ अथवामदेव्यंमहानाम्नीगर्भंद्वितीयंपक्षंगवामदेव्यंमहानाम्नीगर्भंकरोतीति
निदानसूत्रं॥ तयोःपुरस्तान्नपः॥ कयानश्चित्र॰ ऋक्त्रयं॥ १॥ विदामघवन्निदा॰ ऋक्त्रयं॥ विदाराये सुवी
र्यंभुवोवाजानां॰ ऋक्त्रयं॥ विशोमेघवन्निहोगोत्रमिन्द्रसिंहादिशः॥ शिक्षोशचीनांपतेपूर्वीणिपुरूवसो॥
ग्रामिष्ठमेधिष्ठिमिस्वोत्तीर्॰ऋक्॥ प्रेचैतनेत्रचैतयेन्द्रंघृम्नायनःशवे॥ एवाहिशक्रोरायेवाजायवज्रिवः॥ शचि
ष्ठवज्रिन्नेनसेमंहिष्ठवज्रिन्नेनसेओषोहापेवेमेत्वे॥ विदोरायेसुवीर्यंभुवोवाजानांपतेवशोऽग्नेमंहिष्ठ
वज्रिन्नत्नसेयःशविष्ठःश्रवाणा॥ योमंहिष्ठोमघोनामॅर्॰ऋक्॥ शचिः॥ चिकित्वोअभिनोनयेदोविदेतमुस्तुहि॥ इशेहिश
क्रस्तन्नयेहवामहेजेतारमपराजितं॥ सनःस्वर्षदतिद्विषः॥ सनस्वर्षदतिद्विषः॥ पूर्वस्ययत्तेअद्रिवोॅऋमंदाय॥ स्तु
म्नयाधेहनोवसोपूर्त्तिंशविष्ठशस्यते॥ वशोहिशक्रोनतंनयॅसन्यसेप्रनोजनस्वधनहस्तयेषुआवहे॥
श्रवायाशुंगच्छतिसएकयासप्तिस्तोमैःसचतसृभिः॥ एवाह्येवाह्येवाह्यग्नेएवाहिपूषन्॥ एवाहिदेवाः॥ सशक्करीरस्त
नतदपाघोषान्वस्तज्यतेतिब्राह्मणं॥ अथःसावकाउपनिधायमहानाम्नीभिःस्तुवीरन्॥ योयःसामागंत्र्यासऽ

महानाम्नीषुप्रस्ता॰ वत्रयः॥ विदामघवन्निदा प्रथमः॥ शिक्षाशचीनांपतेतिद्वितीयः॥ आयाइतितृतीयः॥ अक्षरः॥ इडयुम्नायनइसत्रऽइडाऽघ्नयेऽघ्नयेऽ
स्मैप्रतिहारः॥ हवनञ्जेन्नहोकारंतेऽन्यउत्तुर्थः॥ पुरीषपदेषु॥ प्राचीवाप्रस्ताकः॥ हावाप्रतिहारः॥ इडाकारःप्रथकारोनिधनंशषऽऽहोथः॥ मध्येप्रथेतिनिधनो॥ अत्रसंप्रसारणं च

दघोषंजनयेत्॥ प्रथस्तोमयोगः॥ वामदेव्येनस्तोष्यमाणःप्राक्स्तोमयोगाद्गावोऽश्वाःप्रजावयोब्रह्मयोयवाद्तिमनसा
ध्यायेद्गवादक्षायेऽ कयानश्चित्रआभुवदितिवामदेव्यंमहानाम्नीगर्भंमैत्रावरुणंसाम॥ वामदेव्यस्यवामदेवऋषिः॥
गायत्रीछंदःमहानाम्न्यइडऋषिःशक्वरीछंदःउभयोरिडोदेवताप्रयोगाःऋत्वियमाणेऽणेइडःप्रजापतिमुपाधाव
दितिणेउपमंत्रयतेऽरहस्येणेपृथिवीहिंकारःरहस्येणेप्राणःप्रस्तावस्येत्यादिगंछंदोमाइतराणीतिवचना
दस्यचतुर्विंशस्तोमः॥ ङ्मृगोकपर्यॅ॰ऋक्त्रयं॥ प्रष्टयोहिकरोतिसप्तिस्तिसचतसृभिःसएकया॥ एवं
प्रथमंपर्यायंसमाप्यमहानाम्नीभिर्गर्भंस्तवनंकुर्युः॥ सेवाऽमिश्रितामिरद्भिःसमीपेनिधायस्तोभंक्रिंघोषंजन
यंतोऽनुयुःनिधनेतुसर्वे॥ प्राघेऽनेकप्रस्तावेक्षितिवचनात्प्रथमएवप्रस्तावेकृशाविधानं॥ द्वितीयादिषुनोंकारेणादि
थादानं॥ आकाशमारभ्यअंतंतोनिधनसामान्यादंतःसाम्नेकानिनिधूनानिसंप्रसारयंतीतिसएहितोपनिषदवच
नाद्विज्ञथकाराणांसंप्रसारणंभवति॥ ऋम्॥ स२विदोमघवन्निदाःप्रस्तावेनशिक्षाप्राचीनांपतेदंऋसामप्र
स्तावः॥ १॥ प्रष्टयोहिकरोतिसएकयासप्तिस्तिसचतसृभिःएवंमहानाम्नीगर्भेणमध्यमंपर्यायंसमा
प्यपुनर्वामदेव्येनतृतीयपर्यायस्यस्तवनंकुर्युः ङ्मृगोकपर्यॅ॰॥ ऋक्त्रयं॥ प्रष्टयोहिकरोतिसचतसृभिः
सएकयासप्तिस्तिसृभिःएवंचतुर्विंशस्तोमः॥ स्तुतस्य॰वाचयित्वायजमानंतंतउक्राताग्नयेकपिमिश्रितमुदक
मासावेनिनयेदनेनमंत्रेणप्रनाधमानाॅसितोवासोमोराजावतुयामपीताउपनिषंतआप्यायेशक्राऋषभायेस्वराज
स्तेअर्षंतुतेवर्षंतुतेहृदेविषमूर्जेराय स्पोषंतद्विदेयेति॥ आगत्यजानुभ्यामुपविसेवाजानुपोहरन्॥ ततउ
परिष्टाज्जपः॥ भक्षः॥ इतिचतुर्विंशमैत्रावरुणंद्वितीयंपक्षं॥ अथश्येतंवैरूपगर्भंत्रैतीयंपक्षंभवतोपुरस्ताज्जपः॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

३ अभिप्रक्सुराधसमिड्मर्च०।१।यद्गावैइ२०।७।सवैरूपमसृजतत्तद्गातस्यघोषान्वसृज्यतेतिब्राह्मणं।उपवाजयमानावैरूपेण स्तुवीरन्निति।स्तं।स्तोमाश्चयजनैर्वीड्यमानाःस्तुवीरन्।।अथस्तोमयोगः।।दीक्षायै०।।प्रभिप्रक्सुराधसमितिशस्यते ५ तवैरूपगर्भंब्रह्मसाम।।शयेतस्यप्रजापतिऋषिःवैरूपस्यविरूपऋषिःउभयोर्दृहतीछन्दःउभयोरिंद्रोदेवता।इमोवैलोकोसहास्तामितिं०णं।।यद्गावइंइतेशतमितिवि०त्रयीविद्याहिरहस्यं०णं।।प्राणाःप्रस्तावस्यैत्यादि।।श्येतवैरूपेसमनीड्यद्गावामि।।अभिप्रवोयद्गानऋचावुपधावामि।प्रजापतिविरूपाद्दृषीड्यपधावामि।इंइदेवतामुपधावामि।दृहतीछंदउपधावामि।चतुश्चत्वारिंशत्स्तोममुपधावामि।उदीचींदिशमुपं०।।प्रात्मानमुपं०।ब्रह्मसाम्नेत्यनु।।चतुश्चत्वारिंशत्स्तोमः।।ऊम्।।अभिप्रवःसुराधसाइंद्रमर्चाजोवा०।।ऋकत्रयं।।पंचभ्योहिकरोतिसप्तिसृभिः सएकादशभिःसएकया।एवंप्रथमंपर्यायंसमाप्यवैरूपेणगर्भस्तवंनंकुर्युः।व्यजनैर्वीड्यमानास्तुवीरन्।देवतापरमितिवैरूपेनिधनात्।।प्राकरशिभुमत्याःस्तोमेप्रतिहारइतिसप्तत्रिंशयामंऊकंप्राइकरोतिएवंनिधनमुपयंत्यायातयामतायाइतिब्राह्मणं।।ऊम्।।यद्गावइंइतेशतमेशतंभ्मीरतस्योवा०।।ऋकत्रयं।।१।। चतुश्चत्वारिंशत्स्तोमोहिकरोतिसएकयासप्तिसृभिःसप्तदशभिःएवंवैरूपगर्भेणमध्यमंपर्यायंसमाप्यपुनःश्येतेनतृतीयपर्यायस्यस्तवनंकुर्युः।ऊम्।।प्रभिप्रवंसुरा०।।ऋकत्रयं।।पंचदशभ्योहिकरोतिसएकादशभिःसएकयासप्तिसृभिरित्येवंचतुश्चत्वारिंशत्स्तोमः।स्तुतस्य०।यजमानवाचंहत्वोद्गातायजनेनवायुमुत्यायतमभिमंत्रयेत।वातःप्राणोमनोन्यःशुभयोभुनोहृदःप्रनःप्रायूंषितारिषत्।उतवातपितासिनउतभ्रातोतनःसखा।सनोजीवातवेधि।।यद्दोवातदेवहेऽमृतंनिहितंगुहा।तस्यनोधेहिजीवसे।इतिरूपेनातनउपरिष्टाच्चपञ्च ५

मक्षः।इतिचतुश्चत्वारिंशद्ब्राह्मणं।।द्वंसिनःतृतीयंपृष्ठं।।अथकालेयंरैवतगर्भंचतुर्थंपृष्ठं।।तयोःपुरस्ताज्ज्योतिः।तरोभिर्वोविदद्वसुं०।ऋक३।।रेवतीर्नःसं०।ऋक३।।स्रेवतीरस्तृतेनऋवाघोषान्वसृज्यतेतिब्राह्मणं।।रैवतस्यस्तोत्रेधनंसंवत्सरंवाशपेयुर्दक्षिणतःसत्वोत्तरतोवत्सानितिसूत्रं।।प्रथमस्तोमयोगः।।दीक्षायै०।तरोभिर्वोविदद्वसुमितिकालेयंरैवतगर्भंछंदोकसामकालेयस्यकछिऋषिःदृहतीछंदःरैवतस्यविश्वेदेवाऋषयःगायत्रीछंदःउभयोरिंद्रोदेवता।स्वाश्वाःप्रसुराश्चेतिवि०यातयामान्यन्यानिछंदांसीति०णं।।चेयंविद्याहिरहस्यं०प्रजाहिरहःणं।।प्राणाःप्रस्तानस्येत्यादि।।प्रथश्चत्वारिंशत्स्तोमः।।ऊम्।।तरोभिर्वोविदद्वसुमं।।ऋक३।।१।।षोडशभ्योहिकरोतिसप्तिसृभिःसप्तदशभिःसएकयाएवंप्रथमंपर्यायंसमाप्यरैवतेनगर्भस्तवनंकुर्युः।।प्रत्ररैवतेस्तोत्रेदेवयजनस्यदक्षिणतोधेनूःसृजोत्तरतोवत्सोधत्वापरस्परंशंकारयेतःसुपुः।इहानिधनस्यात्रसप्रसारणंनभवतीतिपर्वमृक्कं।।ऊम्।।हाउरेवा०।ऋक३।।षोडशभ्योहिकरोतिसप्तदशभिःसएकयासप्तिसृभिरित्येवंप्रथमंचपुनःकालेयेनतृतीयपर्यायस्यस्तवनंकुर्युः।।ऊम्।।तरोभिर्वो०।ऋक३।।षोडशभ्योहिकरोतिसप्तदशभिःसएकयासप्तिसृभिरित्येवंप्रथमंचचतुश्चत्वारिंशत्स्तोमः।स्तुतस्य०।यजमानवाचंहत्वाधेनुर्वत्सांश्चपूर्वेणसदःसंसृज्यपश्चिमेनाग्नीध्रीयमुदीचीनिष्क्रामयेयुःतेउद्गातागोनामभिगायन्तुमंत्रयेतहत्यैकाम्यैचेत्योतइंउरेतेतुष्टेसतनत्स्यधिवोरायःश्रयतामिंउरघ्नंहितंहुवेहुवेतनयंसुपरूतामुपहवंवोशीयंतिमंत्रेण।।प्रइद्धेवुपावुस्तानिनयेद्वास्तोवश्चापोहिष्ठीयाभिरितिं।।उपरिष्टाद्राजपः।।इत्यष्टाचत्वारिंशमहावाकंचतुर्थंपृष्ठं।इतिपृष्ठानि।।इतिमाध्यंदिनंसवनंसमाप्तं।।।।ततःसवनसंस्थासुप्रशास्तोकापथेतमपरयाद्वारानिक्रमणंदिशंयं।।प्रथमस्तृतीयंसवनं।।ततःधिष्ण्योपस्थानादिसर्वंकर्मसदस्युपवेशनान्तंहुत्वाऽर्धंपचमानस्यपुरस्तान्नोपः।।परिस्थानागेरिष्याइतिगायत्रसंहितमुरूणांपवस्वेऽमछेतिसप्तऋध्येपुराजेतीवोऽंधसइतिश्यावाश्वाधीगवेपरिप्रधन्वेतिस्वर्नेधनंतोहविषस्यंवतीषुकावमंत्यामितित्रिणवप्रार्भवः।सर्वाणिसामानिस्तवानि।।प्रत्रसप्तमुध्योस्तवंतोमुवात्।।परिस्थानोगेरिष्या०।ऋक३।पवस्वमधुमत्तम०।ऋक३।इदमछमुताइमे०।ऋक३।पुरोतितीवो०ऋक३।।४।।परिप्रधन्वेड्याय०ऋक३।।।।पा।।स्तुयंस्यैव०किंचनउपोमतिः०परिहारमर्षति।।उस्राधिमेतिप्रतिधेनवोदनस्यदोहनंरपयंतिनिष्कृतं।प्रत्यऊमीरदर्शनं।।६।।

CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

अथस्तोमयोगः। अग्नेस्ते॰ युनक्तु। अन्नं॰मि॰परिस्रवन्तः पवस्वेन्द्रमच्छपुरोजितीवोपरिप्रधन्वसूर्यस्येवेत्याभवः प
वमानः। गायत्रस्सहितसुरूपसकृच्छ्यश्यावाश्वो धीगवसोहविषकावानिसामानि। पुष्कलस्सहितविश्वेदेवाः प्र
जापतिश्यावाश्वो धीगुः सुरुविषः कुत्सइत्यृषयः। गायत्रीककुब्लिगनुष्टुबक्षरपंक्तिर्जगतीतिछन्दांसि। सोमोदेवता॥
साध्यावेनामदेवाआसन्नित्येनमनोहि०॥ त्रयीविद्याहिरण्यं। प्राणःप्रस्तावस्येत्यादि। साम्नेसाम्नेहिकुर्युः कुम्भःपरिषु
वानोगिरिष्ठाः३ऋक्। ३॥ सहस्रधारेऽहःपरिषुऋक्३। २॥ सुरूपंकृष्णमाःपरिषु३सकृद्ऽहःपवस्वाहुमुष्यंऽइदन्द्रेश्यावा
श्वऽपुरोजिऽइत्याश्यावोऽरोजिस्वर्निधनंस्तोहविषोऽत्रिरिष्यन्नावःसूर्यस्येवारं॥ इतित्रिणवआर्भवःपवमानःअन्न
मकरोनोस्वरोसिनयोसिन्नगन्धःसुवर्वसोनमोगन्धर्वायोपरिष्टाद्रूपंनक्षःपिऽदानेसाम्यानेक्षणं। अथयज्ञायज्ञीयंबृहद्रू
र्भमग्निष्टोमसामा। यज्ञायज्ञियस्यगर्गोगृत्समदोवाःपुरस्तान्नपातंयज्ञायज्ञानोमरुतः३ऋक्। ४॥ समग्नेऽऋक्३। ४॥ यज्ञायज्ञीयंबृहद्रू
र्भमित्तिस्त्रोलक्ष्मेत्यज्ञानामितिवैबृहद्बृहतीवृहद्रूर्भःअत्रकेचिदुक्थिनोषंमन्यंतेयेनकर्मणायस्यसंयोगःतद्व्यंजनमतइति। प्रतिस्तोत्रंसुकृत्रु
द्यात्। अथस्तोमयोगःदीक्षायेयज्ञायज्ञावोअग्नयइतियज्ञायज्ञीयंबृहद्रूर्भमग्निष्टोमसामा। यज्ञायज्ञीयस्यात्रिर्वैश्वामर
ऋषिरुष्णिहाबृहतीछन्दःबृहतोभरद्वाजऋषिःगायत्रीछन्दः। उभयोरग्निर्देवता। देवावेब्रह्मन्यभनंतेतिनः। प्रजापतिरकामय
तबहुस्यांप्रजायेयेतिसएतंसप्तदशंस्तोममपश्यत्तमसृजतसएतेनसप्तदशेनस्तोमेनात्मानंसंस्कुरुतसंस्कृतेनात्मनाप्रजा
स्यहिंकारमिच्छमानोयोधर्मोऽएकादशभ्योहिंकरोतिसप्तभिस्सप्तभिसएकया। एवंप्रथमंपर्यायंसमाप्यबृहतोगर्भंस्तवनंकुर्युः।
बृहत्वमग्नेयज्ञानांएकादशभ्योहिंकरोतिसप्तभिस्सप्तभिः। स्यतेषट्सुकृत्२४ताउनाद्दाउवाहस्इत्यस्य
ओपः। एवंबृहद्गर्भेणमध्यंपर्यायंसमाप्यपुनर्यज्ञायज्ञीयेनस्तीयपर्यायस्यस्तवनंकुर्युः। इन्द्रायज्ञाय। ऋक्३। उत्तमायाःस्तोत्रीयां
ध्रुवद्यावाजायेभुवद्यावाजेद्वित्यस्यस्यन्नाभिनिधनं। एकादशभ्योहिंकरोतिसप्तभिस्सप्तभिसएकया। सप्तिरिवेवंत्रयस्त्रिंशस्तोमः। स्तु
तस्योपरिष्टाज्जपः। भक्षः। इतित्रयस्त्रिंशमग्निष्टोमसाम॥ अथोकथानि। एतद्वैत्रिवृतंसाकमश्वंसोभरंवयमुत्वेतिप्रधावतीतिनर्म

धर्मियुक्थानि॥ अग्नेवेनइतिरथंतरंइमाउकमितिभद्रं। प्रवइन्द्रायेत्युद्वंशपुत्रइतिषाष्टिकान्युक्थान्युक्थानांगर्भाः। षाष्टिकान्युक्थान्यु
क्थेष्वितिवचनात्। प्रसवएवैतान्युक्थानिनिर्णवंप्रथममहरेकविंशमयसप्तदशमितिब्राह्मणं॥ अथसाकमश्वस्यगर्भगिरेणो
पुरस्तान्नपातंसूपुत्रंऋक्त्रयं॥ अग्नेत्वंऋक्त्रयं॥ अथस्तोमयोगःदीक्षायैएतंपुत्रकालितइतिसाकमश्वगर्दभंगर्भंप्रथममु
क्थं॥ साकमश्वस्यसाकमश्वऋषिः। गायत्रीछन्दः। गर्दभस्यप्रजापतिऋषिः। सिक्ताविष्टारपंक्तिश्छन्दः। उभयोरग्निर्देवता। देवा
नाम्अग्निष्टोममभिजित्योक्थानिनाशंसुवन्निनंब्रह्मवाहिनोवहंतीतित्रिधा। त्रयीविद्यारहस्यं। प्राणःप्रस्तावस्येत्या
दि। त्रिणवस्तोमः३ऋ। साकमश्वोएतंपुत्रंऋक्त्रयं॥ नवभ्योहिंकरोतिसप्तभिःपंचभिःसएकया। एवंप्रथमंपर्यायंस
माप्यगर्दभंगर्भस्तवनंकुर्युः३ऋ। उग्नाधिऋक्३। नवभ्योहिंकरोतिसप्तभिःएकयासप्तभिःपंचभिःएवंमध्यंसमाप्यपुनःसाकमश्वेन गर्दभ
तीयंस्तवनंकुर्युः। नवःसप्तभिःसएकयासप्तभिः। एवंसमाप्यस्तुतउपभृक्षः। अथसोरेभद्वंगर्भंएकविंशस्तोमं
द्वितीयमुक्थं। तयोःपुरस्तान्नपातंवयमुत्वोपूर्व्येइमाउकमिति। अथस्तोमयोगःदीक्षायैवयमुत्वोपूर्व्येतिसोभरंभद्वंगर्भं
तीयमुक्थंसोभरस्यसुभरऋषिःककुप्छन्दःभद्रस्यगोतमऋषिःद्विपदाविष्टारपंक्तिश्छन्दःउभयोरिंद्रोदेवतादेवाःअग्नि
ष्टोमःणंब्रह्मवाहिनोणंत्रयीविद्याणं। प्राणःप्रस्तावस्येत्यादि। एकविंशस्तोमः३ऋ। सोभरं॥ वयमुत्वामदिवर्यः ऋक्३
सप्तभ्योहिं। सप्तिरिवेवंत्रयस्त्रिंशस्तोमः। स्तुतस्योपरिष्टाज्जपः। भक्षः। इतित्रयस्त्रिंशमग्निष्टोमसाम॥ अथोकथानि। एतद्वैत्रिवृतंसाकमश्वंसोभरंवयमुत्वेतिप्रधावतीतिनर्म
धर्मियुक्थानि॥ अग्नेवेनइतिरथंतरंइमाउकमितिभद्रं। प्रवइन्द्रायेत्युद्वंशपुत्रइतिषाष्टिकान्युक्थान्युक्थानांगर्भाः। षाष्टिकान्युक्थान्यु
क्थेष्वितिवचनात्। प्रसवएवैतान्युक्थानिनिर्णवंप्रथममहरेकविंशमयसप्तदशमितिब्राह्मणं॥ अथसाकमश्वस्यगर्भगिरेणो
पुरस्तान्नपातंसूपुत्रंऋक्त्रयं॥ अग्नेत्वंऋक्त्रयं॥ अथस्तोमयोगःदीक्षायैएतंपुत्रकालितइतिसाकमश्वगर्दभंगर्भंप्रथममु
क्थं॥ साकमश्वस्यसाकमश्वऋषिः। गायत्रीछन्दः। गर्दभस्यप्रजापतिऋषिः। सिक्ताविष्टारपंक्तिश्छन्दः। उभयोरग्निर्देवता। देवा
नाम्अग्निष्टोममभिजित्योक्थानिनाशंसुवन्निनंब्रह्मवाहिनोवहंतीतित्रिधा। त्रयीविद्यारहस्यं। प्राणःप्रस्तावस्येत्या
दि। त्रिणवस्तोमः३ऋ। साकमश्वोएतंपुत्रंऋक्त्रयं॥ नवभ्योहिंकरोतिसप्तभिःपंचभिःसएकया। एवंप्रथमंपर्यायंस
माप्यगर्दभंगर्भस्तवनंकुर्युः३ऋ। उग्नाधिऋक्३। नवभ्योहिंकरोतिसप्तभिःएकयासप्तभिःपंचभिःएवंमध्यंसमाप्यपुनःसाकमश्वेन गर्दभ
तीयंस्तवनंकुर्युः। नवःसप्तभिःसएकयासप्तभिः। एवंसमाप्यस्तुतउपभृक्षः। अथसोरेभद्वंगर्भंएकविंशस्तोमं
द्वितीयमुक्थं। तयोःपुरस्तान्नपातंवयमुत्वोपूर्व्येइमाउकमिति। अथस्तोमयोगःदीक्षायैवयमुत्वोपूर्व्येतिसोभरंभद्वंगर्भं
तीयमुक्थंसोभरस्यसुभरऋषिःककुप्छन्दःभद्रस्यगोतमऋषिःद्विपदाविष्टारपंक्तिश्छन्दःउभयोरिंद्रोदेवतादेवाःअग्नि
ष्टोमःणंब्रह्मवाहिनोणंत्रयीविद्याणं। प्राणःप्रस्तावस्येत्यादि। एकविंशस्तोमः३ऋ। सोभरं॥ वयमुत्वामदिवर्यः ऋक्३
सप्तभ्योहिं। सप्तिरिवेवंत्रयस्त्रिंशस्तोमः। स्तुतस्योपरिष्टाज्जपः। भक्षः। इतित्रयस्त्रिंशमग्निष्टोमसाम॥ अथोकथानि। एतद्वैत्रिवृतंसाकमश्वंसोभरंवयमुत्वेतिप्रधावतीतिनर्म
भद्रमेकविंशस्तोमद्वितीयमुक्थं॥ अथनामेधमुद्वंशपुत्रंगर्दभंसप्तदशस्तोमंतृतीयमुक्थं॥ तयोःपुरस्ताज्जपः। अथोहि३ऋ

॥ आर्चिकाध्यायसूचनं॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ऋक्३।प्रवइंद्रायेत्यृ०।ऋ०२।सोमयोगःदीक्षायै।अथाहीड्गो वर्णइतिनार्मेधमुद्दंशपुत्रगर्मेस्तृतीयमुक्थ्यं।नार्मेधस्यऋषेर्मेधऋषिर्भवति।
कुवित्कपुरुक्षिगनुष्टुप्छंदांसि।उद्दंपुत्रस्यविश्वेदेवाऋषयः।द्विपदात्रिष्टुच्छंदः।उभयोरिंद्रोदेवता।इदावात्सोमस्य।
ब्रह्मवादिनोवदंतीयंविद्याविद्यांप्राणंप्रस्तावस्येत्यादिसप्तदशस्तोमःऊंम्॥नार्मेधंप्रधाहीड्गोऋ३।पंचभ्योहिकरोति।२।११।एवंप्र
थमंपर्यायंसमाप्योद्दंशपुत्रेणगर्मेस्तवनंकुर्युःऊंम्।उद्दंपुत्रं।प्रवइंद्रायेत्यृ०।ऋ३।पंचभ्योहि।१३१।एवमुद्दंपुत्रगर्मेण
मध्यमंपर्यायंसमाप्य।पुनर्नार्मेधेनस्तुतीपपर्यायस्यस्तवनंकुर्युःऊंम्।अथाहीड्गो॥ऋ३।सप्तभ्योहि।१३२इतिसप्तदशस्तोमः।
स्तुतस्योपरिष्टाज्जुपः।भक्षःइतिनार्मेधमुद्दंशपुत्रगर्मेसप्तदशस्तोमस्तृतीयमुक्थ्यं।इषुस्थानि।अथैकविंशः षोडशी।
।समस्तोपस्थानंग्रहवेक्षणं॥पुरस्ताज्जुपःइंद्रजुषस्व॥ऋ३॥अश्वःकक्षःपूर्वस्यांसदसोद्वारिप्रत्यङ्मुक्तिष्ठेत्।योयः
सामागंजुपात्सहिरण्येधारयेत्।स्तोमयोगःदीक्षायैइंद्रजुषस्वेतिगोरिवीतंषोडशिसामागोरिवीतऋषिः।स्वराडनुष्टुप्छंदः।
इंद्रोदेवतेतीइंद्रश्चहवंसमभवतामितिणं।त्रयीविद्याणंप्राणंप्रस्तावस्येत्यादि।२।स्तोमः।ऊंम्।गोरिवीतं।इंद्रजुषस्व।ऋ३।
उक्थंशस्त्रेदधादग्निर्हिरण्येदक्षिणेवसुं।स्तुतस्योपरिष्टाज्जुपःऐंद्रंग्रहइतिभक्षः।इत्येकविंशःषोडशी।।अथरात्रिपर्यायाः।
अत्रसमस्तोपस्थानं।पर्यायेभ्यस्तुरात्रेरितिवचनात्सैवैषापंचदशस्तोमःपंचदशीरात्रिरितिवचनात्।अथप्रथमः
पर्यायःपुरस्ताज्जुपः।पांतमावोअंधसःऋ३।स्तोमयोगःदीक्षायै।पांतमावोअंधसइतिवैतहव्यंरात्रिसाम।वीत
हव्यऋषिः।अनुष्टुप्छंदः।इंदोदेः।पांतमावोअंधसइतिणं।त्रयीविद्याणंप्राणंप्रस्तावस्येत्यादि।ऊं॥पांतमाऽ३वोऽ३अं
धसो।ऋ३।स्तुतस्योपरिष्टाज्जुपः।अनुष्टुप्छंदसापक्षः।अनुष्टुप्छंदसारात्रिरितिवचनात्।पुरस्ताज्जुपः।प्रवइंद्राय।
ऋ३।स्तोमयोगः।दीक्षायै।प्रवइंद्रायमादनमितिशाक्वंरात्रिसाम।शाक्वंऋषिः।अनुष्टुप्छंदः।इंदो।प्रवइंद्रायमादनमि

णं।त्रयीविद्याणं।प्राणंप्रस्तावस्येत्यादि।ऊंम्।शाक्वंय।प्रवइंद्रायमादनं।ऋक्३।स्तुतस्योपरिष्टाज्जुपः।भक्षः।पुरस्ताज्जुपः॥
वयमुत्वातदिदर्थो।ऋक्३।स्तोमयोगःदीक्षायै।वयमुत्वातदिदर्थोइतिकाण्वंरात्रिसाम।काण्वऋषिः।अनुष्टुप्।इंदोदेः।
वयमुत्वातदिदर्थोइतिणं।त्रयीविद्याणं।प्राणंप्रस्तावस्येत्यादि॥काण्वंऊंम्॥वयमु३त्वातदिदर्थो।ऋ३।स्तुतस्योपरिष्टा
भक्षःपुरस्ताज्जुपः।इंद्रायमद्वनेसुतं॥ऋ३।स्तोमयोगःदीक्षायै।इंद्रायमद्वनेसुतमितिश्रोतकक्षंरात्रिसाम।श्रुनंकर्णिऋषिः।
अनुष्टुप्।इंदो।इंद्रायमद्वनेसुतमितिणं।त्रयीविद्याणं।प्राणंप्रस्तावस्येत्यादि।श्रोतकक्षं।ऊंम्।इंद्रायमद्वनेसुते।
ऋक्३।स्तुत।उप।भक्षः।इतिप्रथमःपर्यायः।अथद्वितीयःपर्यायः।समस्तोपस्थानं।पुरस्ता०॥अयंत०।ऋक्३।अथस्तो
मयोगः।दीक्षायै।अयंतइंद्रसोमोमितिदैवोदासंरात्रिसाम॥दिवोदासऋषिः।अनुष्टुप्।इंदोदेः।अयंतइंद्रसोमोमितिणं।त्रयीवि
द्याः।प्राणंप्रस्तावस्येत्यादि॥दैवोदासं।ऊंम्॥अयंतइंद्रसोमो॥ऋ३।स्तु।उप।भक्षः।पुरस्ता।आतनइंद्र।ऋक्३।अथ
स्तोमयोगःदीक्षायै।आतनइंद्रमंतमित्याकूपारंरात्रिसाम॥आकूपारऋषिरसऋः।अनुष्टुप्।इंदोः।आतनइंद्रमंत
मितिणं।त्रयीविद्याणं।प्राणंप्रस्तावस्येत्यादि॥आकूपारं।ऊंम्।आतनइंद्र॥ऋ३।स्तुतस्योपरिष्टाज्जुपःक्षेभोपुरस्ता।अभि
त्वावृषभासुतइतिवि
ष्णोःस्तोमयोगःदीक्षायै।अभित्वावृषभासुतइतिआर्षभंरात्रिसाम।ऋषभऋषिः।अनुइंदोदेवता।अभित्वावृषभासुतइतिवि
ष्णोःत्रयीविद्याणं।प्राणंप्रस्तावस्येत्यादि।आर्षभं।ऊंम्।अभित्वावृषभासुते।ऋक्३।स्तुतस्योपरिष्टाभक्षःपुरस्ता।इदंवसो।
अथस्तोमयोगःदीक्षायै।इदंवसोसुतमंधइतिगारंरात्रिसाम।गरऋषिः।अनुइंदोदेः।इदंवसोसुतमंधइतिणं।त्रयीविद्याणं।प्रा
णंप्रस्तावस्येत्यादि।गारं।ऊं॥इदंवसो।ऋक्३।स्तु।उ।भक्षःइतिद्वितीयःपर्यायः॥अथतृतीयःपर्यायःसमस्तोपस्थानं॥पुरस्ता०।
इदंह्यं।स्तोमयोगःदीक्षायै।इदंह्यन्वोजसेतिस्यूम्नेधनंरात्रिसाम।मयुछंदाऋषिः।अनुइंदोदेः।इदंह्यन्वोजसे

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

णां त्रयी । प्राणः प्र । घृतश्च्युनिधनं । ऋम् । छन्दोनत् ३ । ऋक् ३ । स्तुउ । मः । पुर । आलेतानि । ऋक् ३ । स्तोमयोगः । दीक्षायै । आ
लेतानिषीदतेतिदेवातिथश्रात्रिसामा । देवातिथिऋ । अनुष्टुप् । इंद्रो । आलेतानिषीदतेति । णौत्रयी विद्या । णौ । घाणः प्र ।
देवातिथं ॥ ऊं । आलेतानि । ऋक् ३ । स्तुतस्य । उपरिष्टा । भक्षः । पुर । स्तो । योगेयोगे । स्तोमयोग । दीक्षायै । योगेयोगेतव
स्तरमितिसौमेधश्रात्रिसाम । सुमेधा ऋ । अनुष्टुप् । इंद्रो । योगेयोगेतवस्तरमिति । णौत्रयी वि । प्राणः प्रस्तावस्येत्या
दि । सोमेधं ॥ योगेयोगे । स्तुतस्य । उपरिष्टा । भक्षः । ३ । पुरस्ताज्जपः । इदंसुते । अथस्तोमयोगः । दीक्षायै । इदंसुते
षुसोमेधितिकौत्सश्रात्रिसाम ॥ कुत्स ऋषिः । अनुष्टुप् । इंद्रो दे । इदंसुतेषुसोमेधिति । णौ । त्रयी वि । प्राणः प्रस्ता । कौत्सौ । इदंसुतेषु ।
ऋ ३ । स्तुतस्य । उपरिष्टा । भक्षः । ४ । इतिस्तीयः पर्यायः । इतिरात्रिपर्यायाः ४ । अथसप्तस्तोत्रं । समस्तोपस्थानं । एषस्तो
त्रेभ्यइतिवचनात् । पुरस्ता । एनावो । अग्निं । अत्युद्प्र । ऋ ३ । इमाउवां । ऋ ३ । स्तोमयोगः । दीक्षायै । एनाअत्युदमाउवामितिर
थंतराणि । वसिष्ठऋषिः । ककुबुत्तरावृहती छंदः । अग्निरुषाश्विनौदेवताः । तान्संधिनाभिपद्यायंतेति । णौ । अग्निर्मंथति
णौ । प्राणः प्रस्तावस्येत्यादि । पृथक्स्तुत्येभ्यः संधीहि कुर्युरिति । त्रिवृत्सोमः । तिसृभ्योहिंकरोतिसपराचीभिस्तिसृभ्योहि
करोतिसपराचीभिस्तिसृभ्योहिंकरोतिसपराचीभिरितिविष्टुतिः । त्रिवृत्संधिस्थितिवचनात् । रथंतरं । एनावोअग्न
अत्युद्प्र । इमाउवांदिवि । स्तुतस्य । उपरिष्टा । इन्नयजुषइतिभक्षः । इतित्रिवृत्संधस्तोत्रं । अथचत्वार्यतिरिक्त
स्तोत्राणि । त्रिवृत्प्रथममतिरिक्तस्तोत्रं अथपंचदशमथसप्तदशमथैकविंशमितिब्राह्मणं । जरावोधितद्विवि
द्धि इतिजरावोधीयं । ममुयुः सत्रासाहमितिसत्रासाहीयं । तद्वोगायसुतेसचेतिमार्गीयवं । इदंविष्णुर्विचक्रमइति
वारवंतीयमितिचत्वारि । एषस्तोत्रेभ्यःसमस्तोपतिष्ठंतइतिवचनात् । समस्तोपस्थानं । पुरस्ताज्जुपः । जरावोधः ।
स्तोमयोगः । दीक्षायै । जरावोधतद्विविद्धीतिजरावोधीयमतिरिक्तस्तोत्रंसामा । अग्निः । गायत्रीछंदः । अग्निर्देवता । तानग्निमंत्र

वीदिमान्मईप्रेतिविणौ । त्रयी विद्या । प्राणः प्रस्तावस्येत्यादि । त्रिवृत्स्तोमः । तिसृभ्योहिंकरोतिसपराचीभिरितिविष्टुतिः । ज
रावोधीयं । ऊंम् । जरावोध । ऋक् ३ । स्तुतस्य । उपरिष्टा । गायत्रछंदसा । भक्षः । अथसप्तस्तोपस्थानं । पुरस्ता । त्यमुकः सः । ऋ ३ ।
स्तोमयोगः । दीक्षायै । त्यमुकः सत्रासाहीयमितिसत्रासाहीयमतिरिक्तस्तोत्रं । इंद्र । गायत्री । इंद्रो दे । तान्निंद्रमणौ । त्रयी वि ।
द्या । प्राणः प्रस्ता । पंचदशस्तोमः । पंचभ्योहिं । ३ । पंचभ्यो । ३ । पंच । ३ । इतिविष्टुतिः । सत्रासाहीयं । ऊं । त्यमुकस ।
ऋ ३ । स्तुतस्य । उपरिष्टा । त्रिष्टुप्छंदः । भक्षः । अथस । पुरस्ता । तद्वोगाय । ऋ ३ । स्तोमयोगः । दीक्षायै । तद्वोगायसुतेस
चेतिमार्गीयमतिरिक्तंसामा । मगयु ऋषिः । गायत्री छंदः । विश्वेदेवादेवताः । तान्विष्वंदेवानब्रवीदिमाणौ । त्रयी । प्राणः प्रस्तावः ।
सप्तदशस्तोमः । पंचभ्योहिंकरोति । ३ । पंच । ३ । सप्त । ३ । इतिविष्टुतिः । मार्गीयवं । ऊंम् । तद्वोगाय । ऋ ३ । सुकृतस्य । उ
परिष्टा । भक्षः । ३ । अथसप्तस्तोपस्थानं । पुरस्ता । इदंवि । स्तोमयोगः । दीक्षायै । इदंविष्णुर्विचक्रमइतिवारवंतीयमतिरिक्तस्तोत्रं ।
इंद्र । गायत्री । विष्णुर्दे । तान्विष्णुमब्रवीदिमान्मईप्रेतिविणौ । त्रयी विद्या । णौ । प्राणप्रस्ता । एकविंशस्तोमः । सप्तभ्यो ।
३३ । सप्तभ्यो । ३३ । सप्तभ्यो । ३३ । इतिविष्टुतिः । वारवंतीयं । ऊंम् । इदंविष्णुः । स्तुतस्य । उपरिष्टा । अनुष्टुप्छंदसा । भक्षं
ऋः । ४ । एषस्तोत्रेभ्यः समस्तोपतिष्ठंतइतिवचनात् । इतिचत्वार्यतिरिक्तस्तोत्राणि । अथस्तोमवि
मोचनादि सर्वं प्रकृतिवत् । हारिजैनस्यभक्षणेतिरोहस्येतिविशेषः । इतिश्रीमद्दीक्षितवेदाभास्करनाद्दीक्षितगार्वक्षै
नरचितायां सप्तसोमसंस्थापद्धतौ सर्वस्तोमसर्वपृष्ठस्तोत्रीयमः समाप्तः ॥ ॥ ज्योतिष्टोमेवातिरात्रेतिरिक्तस्तोत्राण्या
दृश्यात्षोडशीमतीतिशंदित्यस्तएवगर्भाःपृष्ठेषुयज्ञायज्ञीयंचपृष्ठहऊर्भमितितत्रवरणद्यदवसानीयांतंसर्वैज्योति
ष्टोमातिरात्रवत् । तत्रपृष्ठेषुयज्ञायज्ञीयेपंचसुगर्भाभवंति । विश्वरूपाज्योतिर्गोनानांचनिवृत्तिः । अथच

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तु होमात्मकः प्रस्थक्रिरुच्यते। उपासमेइत्यत आरभ्य इदं विष्णुरित्यंतं। प्रत्यस्वर्ज्योतिष्टोमातिरात्रवत्॥ छं॥
इतिज्योतिरहोयामः॥ छं॥ सं ३७ ६७ भाद्र वदि ९२ समाप्तं॥ ॥ अथ बृहत्पृष्ठविशेषः॥ पवस्वनाचोग्नेयेतेप्रतिपवं॥
अग्निदूतमित्रेवयमिद्मिद्रामिद्रंग्नेत्याज्यानि॥ चतुर्ऋचानामावर्त्तंघ्नंत्यामुद्धरतिसन्नं॥ त्वामिद्धीतिबृहत्पृष्ठं॥ उत्तमा
याध्नेयुषाइति। ब्रह्मसामेश्येतं। पोक्षले शुध्येसरवत्रचः प्र जापतिऋषिः। प्रत्यस्वरथंतरवत्। प्रथमेज्योतिष्टो
मप्रयोगेब्राह्मणस्यरथंतरमेवपृष्ठं। द्वितीयेबृहदन्तरतीयेरथंतरमित्येवप्रजानामित्यायरथंतरयोर्वेत्यासइत्याहुः॥ आ
षेयकल्पेनतुत्रयोर्वेलीकल्पइत्यादिनाब्राह्मणस्यसर्वत्रारभंतरमेवपृष्ठं क्षात्रियस्यबृहदेवेतुक्तं॥ अथातिरा
त्रेसंस्थाब्राह्मणोक्ता षोडशिकाःस्तषोडशिकानाइतितुल्यविकल्पः॥ छं॥ लिखितमिदं पुस्तकं सङ्खेन॥ छं॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

10
K K S U LIBRARY
RAMTEK
441 106
M1020
Dist Nagpur

[OrderDescription]
,CREATED=22.10.20 17:20
,TRANSFERRED=2020/10/22 at 17:22:10
,PAGES=10
,TYPE=STD
,NAME=S0004442
,Book Name=M-1020-AAHOYAM PRAYOG
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection